समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है।

संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : रु. ३/-

लोक कल्याण सेतु

वर्ष : ११ | अंक : १२९ | १६ मार्च से १५ अप्रैल २००८

मासिक समाचार पत्र



आध्यात्मिक उन्नति के बिना
नैतिक उन्नति हो नहीं सकती ।
भौतिक उन्नति दुःख, चिंता,
तनाव आदि के बिना रह नहीं सकती ।

आध्यात्मिक उन्नति एकमात्र उपाय है ।

विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों के दृश्य





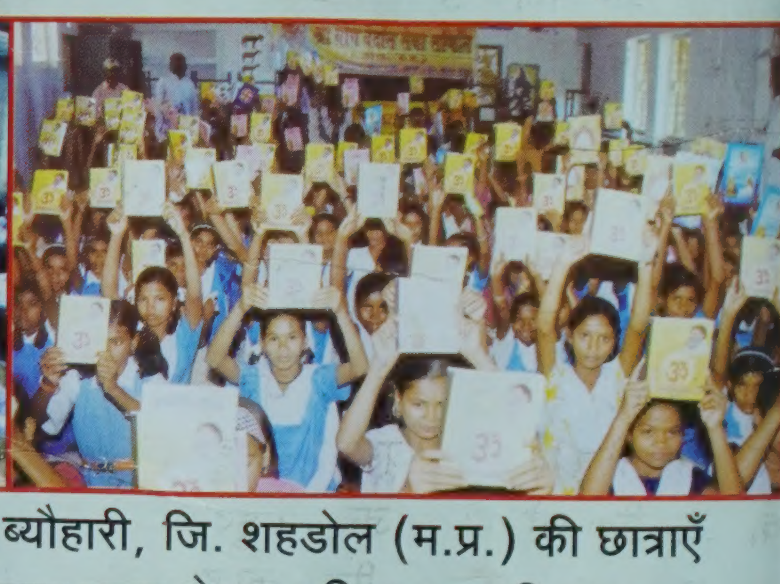
भ्रामरी प्राणायाम करते अम्बाला (हरि.) के छात्र तथा
नजीबाबाद, जि. बिजनौर (उ.प्र.) में 'संस्कार सिंचन कार्यक्रम' व सत्साहित्य का वितरण।





योगाभ्यास करते मोठे वाघोदे, जि. जलगाँव (महा.) तथा सूर्य को अर्घ्य देते गेवराई, जि. बीड (महा.) के विद्यार्थी।





स्मृति व बुद्धिवर्धक भ्रामरी प्राणायाम करते ब्यौहारी, जि. शहडोल (म.प्र.) की छात्राएँ
तथा कोरबा (छ.ग.) की छात्राओं में सुवाक्य युक्त लेखन पुस्तिका का वितरण।





'व्यसनमुक्ति अभियान' हेतु प्रशिक्षण प्राप्त करते ग्वालियर (म.प्र.) के बच्चे तथा
प्राणायाम का अभ्यास करते 'बाल सुधार गृह', धनबाद (झारखण्ड) के बालक।

लोक कल्याण सेतु

वर्ष : ११
अंक : १२९
मूल्य : रु. ३/-

१६ मार्च से १५ अप्रैल ०८

सदस्यता शुल्क :

भारत में : (१) पंचवार्षिक : रु. १००/- (२) आजीवन : रु. ३००/-

विदेशों मे : (१) पंचवार्षिक : US $ 50 (२) आजीवन : US $ 125

कार्यालय **'लोक कल्याण सेतु'**
संत श्री आसारामजी आश्रम,
संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, अमदावाद-५.
फोन : (०७९) ३९८७७७३९, ६६११५७३९, २७५०५०१०-११.
e-mail : ashramindia@ashram.org web-site : www.ashram.org
Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

स्वामी : अखिल भारतीय श्री योग वेदांत सेवा समिति
प्रकाशक और मुद्रक : निलेश पटेल
प्रकाशन-स्थल : अखिल भारतीय श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, मोटेरा, जि. गाँधीनगर (गुज.)। पोस्ट : साबरमती-३८०००५.
मुद्रण-स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस, मिठाखली, अमदावाद।
सम्पादक : सि.ना. अग्रवाल

'लोक कल्याण सेतु' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना रसीद क्र. और सदस्यता क्र. अवश्य लिखें।

अनुक्रम

करके तो देखिये !

आप कोई भी क्रिया करो किंतु हृदय में भाव हो कि भगवान के लिए कर रहे हैं तो वह भजन ही है; मुख से जप, पाठ, भगवद्‌चर्चा करो या हाथ से भगवान को फूल-माला चढ़ाओ। भजन केवल हाथ या जीभ से ही नहीं, पाँव से भी संभव है।

एक महात्मा मौन रहा करते थे। उन्होंने छोटा-सा गोवर्धन बना लिया और जप करते हुए उसकी १०८ परिक्रमा करते थे। यह पैर से भजन करना ही तो है। इसमें घूमना भी हुआ जिससे स्वास्थ्य ठीक रहे और भजन भी हुआ।

गुरु के द्वार पर शबरी भीलन का झाड़ू लगाना भी भजन ही था। रामजी के सेतु-निर्माण में नन्ही गिलहरी का बालू के कण लाना भी भजन था। तो ऋषि प्रसाद या कैसेटों द्वारा लोगों को सत्संग पहुँचाना यह भी कम भजन नहीं है। ईश्वर और समाज के बीच दैवीकार्य का सेतु बनना यह भी कम भजन नहीं है। कार्य कोई भी हो, यदि उद्देश्य भगवान हैं तो वह भक्ति हो जाती है।

'श्रीमद्‌भागवत' में भगवान श्रीकृष्ण उद्धवजी से कहते हैं : ''मेरे भक्त को चाहिए कि अपने सारे कर्म मेरे लिए ही करे। यदि साधक भय, शोक आदि के अवसर पर होनेवाली भावना और रोने-पीटने, भागने जैसे निरर्थक कर्म भी निष्कामभाव से मुझे समर्पित कर दे तो वे भी मेरी प्रसन्नता के कारण धर्म बन जाते हैं।''

आप खाइये किंतु 'मैं खा रहा हूँ' इस भाव से नहीं बल्कि इस भाव से कि 'जिनकी सत्ता से शरीर को बल-स्फूर्ति-चैतन्यता प्राप्त होती है, जो इन्द्रियों के स्वामी गोविंद हैं, मैं उनको खिला रहा हूँ।' इससे आपका भोजन करना भी भजन हो जायेगा। आप गृहिणी हैं तो परिवार के लिए नहीं, परमात्मा के लिए भोजन बनाइये। आप विद्यार्थी हैं तो भगवान को पढ़कर सुनाइये। आप ड्राइवर हैं तो भगवान को बिठाकर घुमाइये, यात्री के रूप में वह प्यारा प्रभु ही तो है। हँसना हो तो भगवान के लिए ठहाका मारकर हँसिये, रोना हो

तो भगवान के लिए आँसू बहाइये । इस तरह आपकी हर हरकत प्रभु की इबादत हो जायेगी, आपकी हर साँस प्रभु का सुमिरन बन जायेगी। आप अपने जीवन में इस भावमय चिंतन को उतारकर तो देखिये ! बीच-बीच में शांत हो जाइये उसीकी शांति में, उसीकी प्रीति में रमण कीजिये। **वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ।** ऐसे दुर्लभ महान आत्मा होने का इरादा पक्का करिये और लग जाइये ।

*

परम कल्याणकारी है 'भगवद्स्मृति'

एक स्थान पर चार भक्त एकत्रित हुए। उनमें से एक बोला : ''मैंने मन में एक भगवन्नाम लिया है। उसमें 'र' अक्षर है । बताओ, वह नाम क्या है ?'' शेष तीन कहने लगे : ''रघुपति, रघुनाथ, राम, राघव, रमापति, राधारमण, गदाधर, दामोदर।'' इतने लोग इतनी देर भगवन्नाम ढूँढ़ते रहे, अंत में उसने कहा : ''मेरे मन में 'मुरारी' है।''

फिर एक बोला : ''मैंने मन में भगवान का एक वस्त्र लिया है। बताओ, आज मैं प्रभु को किस रंग का वस्त्र पहनानेवाला हूँ ?'' साथी कहने लगे : ''पीला, लाल, नीला, हरा, सफेद, गुलाबी।'' यह कितना उत्तम चिंतन है !

भक्त परस्पर ऐसी ही चर्चा करके अपने मन को भगवान में ले जाते हैं। आपका चिंतन जैसा होगा वैसा ही आपका चित्त बनेगा । संसार का चिंतन करनेवाले का चित्त संसारी हो जाता है और अधम योनियों में ले जाता है । भगवान का चिंतन करनेवाले का चित्त भगवन्मय हो जाता है और जन्म-मरण के बंधन से पार करा देता है।

मान लो कि आप हाथ में एक केला लेते हो। आपको केले को देखकर यह कथा स्मरण आनी चाहिए - भगवान श्रीकृष्ण पांडवों के संधिदूत बनकर हस्तिनापुर गये तो दुर्योधन के घर तो आमंत्रण देने पर भी नहीं गये और विदुरजी के घर बिना बुलाये पहुँच गये। विदुर-पत्नी को घर में और कुछ नहीं मिला तो वह केला ही खिलाने लगी। प्रेम का इतना आवेग कि केले का गूदा फेंकती जाय और छिलका देती जाय ! भगवान श्रीकृष्ण प्रेम से वह केले का छिलका भी खाते जायें। हे भाई ! आपके हाथ में जो केला है, वह भी तो उसी केले के वंश का है - यह स्मरण करें।

आम्र को देखने पर आपको यह स्मरण करना चाहिए कि 'आम्र' नाम के अक्षर 'आमर' में 'राम' नाम के अक्षर 'र, आ, म' आने की ही यह महिमा है कि आम्र इतना मीठा होता है।

मेघ देखकर आपको 'मेघश्याम' और कमल देखकर 'कमललोचन' का स्मरण करना चाहिए।

तोता दिखायी दे तो उसके हरे पंख देखकर हमारे मुख से निकल पड़े 'हे हरे !' उस हरे रंग में भगवान श्रीहरि की ही तो चमक चमचमा रही है ! चंद्रमा को देखकर भगवान चंद्रशेखर की स्मृति हो जाय । मुरली को देखकर मुरलीधर का सुमिरन हो जाय । सृष्टि में कहीं पर भी कुछ विशेषता दिखायी पड़ती है तो वह परमात्मा का ही वैभव है। उसे देखकर परमात्मा की स्मृति करने से चित्त परमात्ममय होता जायेगा और धीरे-धीरे परमात्मपद में शांत हो जायेगा। फिर आप जिस धरती पर कदम रखेंगे वह तीर्थ हो जायेगी । आपके होनेमात्र से लोगों के हृदय में शांति आने लगेगी, ऐसा मंगलमय आपका जीवन हो जायेगा !

(पृष्ठ ५ का शेष)

महाराज ने उत्तर दिया : ''वैद्यजी से बोलो ऐसी औषधि दें जिससे यह संसार हम भूल जाएँ और केवल भगवान का ही स्मरण होता रहे।''

संसारी व्यक्ति भगवान की बात सुनकर भी सांसारिक चिंतन से उपराम नहीं होता लेकिन महापुरुष कितने विलक्षण होते हैं कि तुच्छ संसार की बात को भी भगवान की ओर मोड़ देते हैं !

...भगवान ही याद रहें



ब्रह्मलीन संत करपात्रीजी महाराज सन् १९८१ में कुछ अस्वस्थ हो गये थे। महाराजश्री ने अपने एक भक्त से कहा : ''मुझे श्री भगवान की कथा सुनाओ।''

भक्त बोला : ''आपकी अस्वस्थता के कारण वैद्यजी ने कुछ भी सुनाने को मना कर दिया है।''

महाराज बोले : ''श्री भगवान की कथा ही तो यथार्थ में मनुष्य को स्वस्थ बनाती है। 'गजेन्द्रमोक्ष' ही सुनाओ।''

भक्त ने वहाँ उपस्थित पुरी के शंकराचार्यजी से अनुमति लेकर उन्हें 'गजेन्द्रमोक्ष' स्तोत्र सुनाया। एक अन्य भक्त से महाराज ने कहा : ''तुम्हें कोई स्तोत्र स्मरण हो तो सुनाओ।''

उसने भी वैद्य की सूचना दोहराते हुए पूर्ण विश्राम की प्रार्थना की। एक अन्य सज्जन बोले : ''वैद्यजी ने तो यहाँ तक कहा है कि जप आदि भी महाराज को अभी नहीं करने देना चाहिए।''

महाराज आश्चर्य प्रकट करते हुए किंचित् हास्य मुद्रा में बोले : ''अच्छा ! तब तो वैद्यजी से कहो कि वे कोई दूसरा रोगी ढूँढ़ें।''

इतने में शंकराचार्यजी पर महाराज की दृष्टि गयी, उनसे बोले : ''मुझे कौन-सी कथा सुननी चाहिए, भगवान की कथा या लोक-कथा ?''

वे बोले : ''आपके लिए तो भगवद्कथा सर्वोत्तम है।''

महाराज बोले : ''यही तो मैं भी कहता हूँ। फिर रोकते क्यों हो ?''

शंकराचार्यजी ने कहा : ''महाराज ! आप तो स्वयं ज्ञातज्ञेय, प्राप्त-प्राप्तव्य और कृतकृत्य हैं। आपका वाचिक व मानस जप स्वतः निरंतर चल रहा है। अभी अन्य श्रम नहीं करना चाहिए।''

महाराज भी भावविभोर हो गये और कहने लगे : ''ठीक कहते हो। यह संसार श्रम ही तो है - **'श्रम एव हि केवलम्' भगवान की कथा और चिंतन छोड़कर शेष सब श्रममात्र ही तो है।''**

''महाराजजी ! चिकित्सकों की राय में आपको पूर्ण विश्राम करना चाहिए।''

''विश्राम तो भगवद्चिंतन एवं भगवान की कथा में ही है। शेष तो सब श्रम-ही-श्रम है। सनकादि मुनि अखंड बोधरूप समाधि को छोड़कर भी कथा सुनते हैं। श्रीमद्भागवत, श्रीमद्वाल्मीकि रामायण, विष्णुसहस्रनाम - ये हमारे प्राण हैं, अतः इन्हें निरंतर हमें सुनाते रहो।''

एक भक्त ने कहा : ''महाराजजी ! आपको लेटे ही रहना चाहिए।''

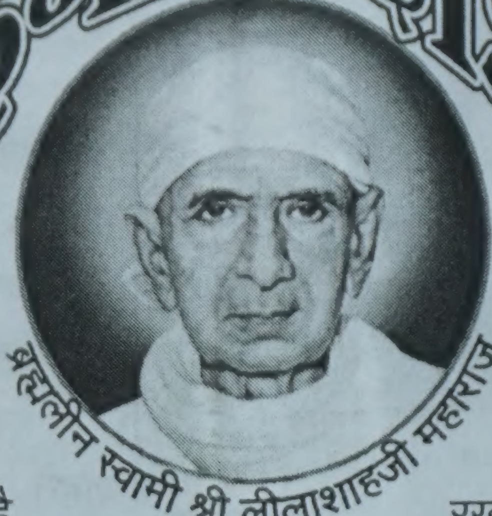
महाराज बोले : ''अनादिकाल से जीव सोता पड़ा रहा है। उसे तो वस्तुतः अब जागने की आवश्यकता है।''

एक अन्य सज्जन ने कहा : ''महाराजजी ! आपको बैठे हुए बहुत देर हो गयी, इससे थकावट आ जायेगी।''

महाराजजी बोले : ''हाँ भैया ! यह जीव अनंतकाल से बैठा है। अब तो इसे कुछ सत्कर्म करना ही चाहिए।''

किसीने कहा : ''महाराजश्री ! वैद्यजी ने आपके लिए बहुत अच्छा धातु-पाक (औषधि विशेष) बनाकर दिया है।'' (शेष पृष्ठ ४ पर)

हमारी दौड़



ब्रह्मलीन स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज

अपनेको पहचानो - हम कौन हैं ? लाखों-करोड़ों लोगों को यह मालूम नहीं कि संसार में आने का हमारा उद्देश्य क्या है ! आप शरीर नहीं हो परंतु दूसरे के धर्म को आरोप करके अपनेको शरीर मानकर बैठे हो । आप शरीर से अलग हो। शरीर में ही जठराग्नि है वह अग्नि का अंश है, जो तरल है वह जल का अंश है, जो हिलता-डुलता है वह पवन का अंश है, जो ठोस है वह पृथ्वी है और जो पोलापन है वह आकाश का अंश है। आप शरीर नहीं हो, मन नहीं हो, न बुद्धि हो और न प्राण । आप उस चेतन, सत्-स्वरूप, आनंदस्वरूप परमात्मा के अंश हो, अतः अपनेको ठीक-से पहचानो और पहचानकर वैसा ही बर्ताव करो तो आनंद आपकी झोली में होगा ।

सुख-दुःख, आपदा में प्रसन्नचित्त रहना ही ज्ञानी का लक्षण है। ज्ञानी मनुष्य कभी भी दुःखों से चिन्ताग्रस्त नहीं होता और उसका मन पर्वत की भाँति सदैव एक स्थान पर स्थिर रहता है। जो भी उसके साथ घटित होता है उसे वह भगवान की लीला समझता है। वह देहाभास से विरक्त होकर अपनेको सुखी समझता है ।

दुःख को देखकर डरना नहीं चाहिए, धीरज धारण करने से दुःख भी सुखरूप हो जाते हैं । सुख भी चले जाते हैं और दुःख भी चले जाते हैं परंतु देखनेवाला सदा ही रहता है ।

सुख सपना दुःख बुलबुला दोनों हैं मेहमान ।
दोनों बीतन दीजिये सोऽहं को पहचान ॥

शब्द और स्पर्श से जो जान लिये जायें वे भगवान नहीं हैं। भगवान तो आनंदस्वरूप हैं। 'सब जगह, सब समय एवं सबमें भगवान व्याप्त हैं' - यह भावना करो, सब प्रभु दिखने लगेगा ।

सत्संग करो। सत कभी-कभी नहीं वरन् नि करना चाहिए। याद रखो सत्संग में सब बातों का लगता है । सत्संग महाधन सत्संग से लोक-परलोक दोनों ज्ञान हो जाता है । शरीर स्व रखो और मन को भी नीरोग बना विषय-विकार मन के रोग हैं, उनको पास आने देना चाहिए। फिर समझो आनंद आपसे नहीं है। समाधि में तो आनंद मिलता ही है प जब जाग्रत-अवस्था भी में आनंद भासने लगे सफलता है। जब मन की काई दूर होगी तो आन ही-आनंद मिलेगा । आनंद बाहर से नहीं अ है, आप स्वयं आनंदस्वरूप ही हो। मनीराम बुरे संग से बचाओ। आप शक्ति के भंडार अपनी शक्ति को पहचानो।

चर्च द्वारा यौन दुराचार का भुगतान

चार साल से भी ज्यादा दिनों तक च एक मुकदमे में आखिर सैन डियेगो का रोम कैथोलिक चर्च पादरियों द्वारा यौन शोषण पीड़ित १४४ अभियोगियों को १९ करो ८१ लाख डॉलर (७९२.४ करोड़ रुपये का भुगतान करने को तैयार हो गया है यह किसी चर्च द्वारा यौन शोषण से पीड़ित को दिया जानेवाला दूसरा सबसे बड़ भुगतान है। इससे पहले जुलाई २००७ लॉस एंजेलिस के एक चर्च ने ऐसे ही ५० मुकदमों का निपटारा ६६ करोड़ डॉल (२६४० करोड़ रुपये) के भुगतान के माध्यम से किया था ।

शुक्रनीति

(गतांक से आगे)

जीविकारहित, व्याधि से पीड़ित तथा शोक से आर्त्त लोगों को यथाशक्ति सहायता प्रदान कर परोपकार करना चाहिए और कीड़े व चींटियों तक के सुख-दुःखादि को अपना ही समझना चाहिए ।

किसी भी प्रकार से सूर्य की ओर देर तक न देखे। सिर पर बहुत भारी बोझ लेकर न चले। इसी प्रकार अत्यंत सूक्ष्म, अत्यंत चमकीली, अपवित्र और अप्रिय वस्तुओं को देर तक नहीं देखना चाहिए । मल-मूत्रादि वेगों को रोके हुए किसी कार्य को करने में प्रवृत्त न हो और उक्त वेगों को बलपूर्वक न रोके।

परस्पर बातचीत करते हुए दो व्यक्तियों के बीच में से नहीं निकलना चाहिए । मित्र, भाई, बांधव - इन सबके साथ सदा आत्मवत् व्यवहार करना चाहिए । दानशील, धार्मिक और शूरवीरों की गुण-प्रशंसा सदा प्रयत्नपूर्वक सुननी चाहिए तथा उनके दोषों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए।

गुरुजन, बलवान, रोगी, शव, राजा, माननीय व्यक्ति, व्रतशील और यान (सवारी) पर जानेवाले के लिए स्वयं हटकर मार्ग दे देना चाहिए।

'मैं मृत्यु के मुख में पड़ा हुआ हूँ, मेरी क्षण भर की भी आयु शेष नहीं है। दान और धर्म - इन दोनों को छोड़कर परलोक में मेरा और कोई सहायक नहीं है। दानशील लोगों के आश्रय से ही यह संसार ठहरा हुआ है, शठों के आश्रय से नहीं।' - ऐसा समझकर यथेष्ट दान और धर्म का आचरण करना चाहिए। दान से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं, फिर अन्य लोगों का तो कहना ही क्या है ?

संसार में पिता की आज्ञा का उल्लंघन करने से राजपुत्र उत्तम पद को पाकर भी उससे दास के समान भ्रष्ट हो जाते हैं।अतः पुत्र को सदा मन, वचन और कर्म से पिता की सेवा और आज्ञापालन में तत्पर रहना चाहिए।

पुत्र सदा वही काम करे जिससे पिता संतुष्ट और प्रसन्न हों। जिस कर्म से पिता को थोड़ा-सा भी कष्ट हो, उसे कदापि न करे। (यदि पिता ईश्वरप्राप्ति के पथ पर चलने में विरोध करते हों तो उनकी आज्ञा ठुकराने में दोष नहीं माना जाता।)

जिस परमेश्वर की उपासना करे उसे सर्वोत्कृष्ट कहे, नास्तिकता से, दुर्बुद्धि से उसमें दोष न ढूँढ़े अपितु हर्ष के साथ उसकी आराधना करे ।

यदि मनुष्य किसी आप्तवक्ता (हितैषी एवं यथार्थ वक्ता) के वचन को न मानकर अहंकारवश कोई कार्य कर डालता है, फिर उसका विपरीत फल पाता है तो इसमें रोना-धोना क्या ? यह तो उसकी नासमझी का ही दोष है ।

स्वजनों के साथ विरोध, बलवान के साथ स्पर्धा तथा स्त्री, बालक, वृद्ध और मूर्खों के साथ विवाद कभी नहीं करना चाहिए ।

जो बात को देर तक सुने और उसके तत्त्व को शीघ्र समझ ले, जो किसी कार्य के रहस्य को समझकर उसमें हाथ डाले और किसी कामना के वश में न पड़े ऐसा व्यक्ति अपने कार्य को सिद्ध करने में सफल होता है ।

बल के मद से उन्मत्त मनुष्य सदा बिना सोचे-विचारे युद्ध करने में मन लगाता है और उसके मन के विरुद्ध चलने पर मनुष्यों व पशुओं को भी पीड़ित करता है ।

बड़े लोगों की आज्ञा के बिना उनके साथ कार्य करने की इच्छा न करे क्योंकि देवताओं के साथ बिना अनुमति के अमृतपान करने से राहु का सिर काटा गया ।

(क्रमशः) ❑



जब यवनों ने किया प्रभु-प्रेमरस का पान

एक बार चैतन्य महाप्रभु वृंदावन से प्रयाग की ओर जा रहे थे। उनके साथ तीन सेवक थे। चलते-चलते सभी विश्राम हेतु एक सघन वृक्ष की छाया में बैठ गये। थोड़ी ही दूरी पर कुछ गौएँ चर रही थीं, ग्वाल-बाल गा रहे थे। उनमें से एक ग्वाल गर्दन टेढ़ी करके भगवान श्रीकृष्ण जैसी त्रिभंगी मुद्रा में खड़ा हो बाँसुरी बजा रहा था। महाप्रभु ने मुरली की मधुर तान सुनी और भावावेश में उन्मत्त नृत्य करते-करते बेहोश होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। उनके मुख से फेन निकलने लगा और आँखें ऊपर चढ़ गयीं। इतने में मुसलमान राजकुमार बिजलीखाँ अपने धर्मगुरु व १०-२० घुड़सवारों सहित वहाँ से गुजरा। बेहोश पड़े एक संन्यासी को देख उन्होंने समझा कि द्रव्य के लालच में इसके साथियों ने इसे धतूरा दे दिया है। महाप्रभु के सभी साथियों को कसकर बाँध दिया गया। सैनिकों के सरदार ने आदेश दिया : ''देखते क्या हो, इन्हें यहीं कत्ल कर डालो।''

कत्ल का आदेश होते ही सन्नाटा छा गया। भट्टाचार्य नामक महाप्रभु का सेवक थर-थर काँपने लगा। दूसरे सेवक ने साहस करके कहा : ''आपलोग हम पर व्यर्थ ही संदेह क[...] हैं। हम यहीं के तो हैं! हमें आप यह[...] शासनकर्ता के पास ले चलिये। वहाँ ह[...] बहुत से यजमान और शिष्य हैं। वे [...] हमें जानते हैं।''

सैनिकों को संतोष नहीं हुआ। प्रभु[...] तीसरा साथी कृष्णदास राजपूत था। [...] कड़ककर बोला : ''हम राजपूत हैं, राजपू[...] दुष्टों का संहार कर तलवार की प्यास बुझ[...] हमारा नित्य का काम है। अभी मेरे आ[...] देने पर सैकड़ों योद्धा यहाँ एकत्र[...] जायेंगे और बात-ही-बात में तुम्हें अपने[...] कड़े वचनों का फल मिल जायेगा।''

सभी सैनिक अपने पीर की ओर दे[...] लगे। पीर ने कुछ गम्भीरता के साथ [...] स्वर में पूछा : ''ये संन्यासी बेहोश क्यों पड़े हैं[...]

कृष्णदास ने कहा : ''ये हमारे गुरु हैं, [...] कभी-कभी मिरगी का दौरा पड़ जाता है।''

कृष्णदासजी इतना कह ही रहे थे कि मह[...] चैतन्यता लाभ करके उठ खड़े हुए और प्रे[...] गद्गद होकर नृत्य करने लगे।

राजकुमार ने पूछा : ''बाबा! आप अब [...] बेहोश क्यों पड़े थे? मालूम होता है आपके [...] साथियों ने आपको धतूरा खिला दिया था। अ[...] रुपये-पैसे देख लीजिये। आप जो कहेंगे, [...] वही दंड दिया जायेगा।''

महाप्रभु ने अत्यंत सरलता के साथ क[...] ''भाइयो! मैं तो भिक्षुक संन्यासी हूँ, कामि[...] कंचन का कभी स्पर्श नहीं करता। मुझे धतूरा[...] से किसीको क्या लाभ हो सकता है? और ये[...] साथी तो मेरे दूसरे शरीर ही हैं। आप घब[...] नहीं, मुझे कभी-कभी मिरगी का दौरा पड़ता[...] उसीसे मैं बेहोश हो गया था।''

उन्होंने सभी साथियों के बंधन खोल दि[...]

अब महाप्रभु व पीर की परस्पर धार्मिक च[...] होने लगी। यवन राजकुमार बड़ा ही सहृ[...]

सुशील और शांत प्रकृति का था । वह प्रभु की सरलता, प्रेमाभक्ति व तन्मयता को देखकर मुग्ध हो गया और हृदय से उन्हें स्नेह करने लगा। पीर भी धर्मान्ध नहीं थे। महाप्रभु की आत्मानुभव-संपन्न वाणी सुनकर उन्होंने इसलामीपन का आग्रह छोड़ दिया । प्रभु के चरण पकड़कर वे कहने लगे : ''यकीनन, आज मैंने खुदा के ही दीदार किये हैं, मेरे दिल में अब अमन-चैन बरस रहा है। मैं तो पीरपन के गरूर में अपनी असलियत को ही भूल गया था। आपने मुझ डूबते हुए को हाथ पकड़कर उबारा है, अब आप ही कृपा करके मुझे आगे का रास्ता बतलाइये ।''

महाप्रभु ने कहा : ''आपका हृदय शुद्ध है, इसमें अभिमान रह ही नहीं सकता । यह तो राम के रहने की जगह है। भगवान सर्वशक्तिमान और सब कुछ करने में समर्थ हैं। उनसे किसीके हृदय का भाव छुपा नहीं है। उन्हें किसी भी नाम से पुकारिये, उनके किसी भी रूप का सच्चे हृदय से ध्यान कीजिये, उसीसे वे प्रसन्न हो जायेंगे क्योंकि संसार में जितने नाम-रूप हैं वे सब उन्हींके हैं। आज से अपनेको रामदास समझिये, इसीमें आपका कल्याण है।''

बस, उसी समय से उन्होंने अपना नाम रामदास रख लिया और वे 'श्रीकृष्ण, श्रीकृष्ण' कहकर नृत्य करने लगे। राजकुमार बिजलीखाँ तो पहले से ही महाप्रभु को आत्मसमर्पण कर चुका था, उसके कोमल हृदय में महाप्रभु की प्रेममयी मूर्ति पहले से ही विराजमान हो चुकी थी किंतु अब तो वह अपनेको नहीं रोक सका। अपने धर्मगुरु के इस परिवर्तन का उस पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। वह भी 'कृष्ण-कृष्ण' कहकर महाप्रभु के चरणकमलों में लोटने लगा। महाप्रभु ने उसे हृदय से लगा लिया । महाप्रभु का आलिंगन पाते ही सरल हृदय राजकुमार पागल की भाँति नृत्य करने लगा ।

वह अपने साथियों सहित सदा श्रीकृष्ण-कीर्तन में ही मग्न रहने लगा। वे सब-के-सब 'पठान वैष्णव' के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनका एक अलग ही दल बन गया। बिजलीखाँ हिन्दुओं के जिस तीर्थ में भी जाता वहाँ वैष्णव लोग उसके भक्तिभाव से संतुष्ट होकर उसका खूब आदर करते थे। □

...और खोजकर्ता न्यूटन नहीं भारतीय निकले

हाल ही में लंदन में किये गये एक अनुसंधान के मुताबिक दक्षिण भारत के अनामी पंडितों की एक गोष्ठी ने गणित के एक बहुत ही मौलिक सिद्धान्त की खोज न्यूटन से भी सैकड़ों वर्ष पूर्व कर ली थी।

'यूनिवर्सिटी ऑफ मैनचेस्टर' के डॉ. जार्ज गेवर्गीस जोसेफ के मुताबिक 'केरल गोष्ठी' ने 'अनंत श्रृंखला' (Infinite series), जो कि सांख्यिकी (Calculus) का एक अहम अंग है, का आविष्कार सन् १३५० के आस-पास ही कर लिया था, जबकि पुस्तकों में इसकी खोज का श्रेय सर आइजैक न्यूटन और गॉटफ्रेड लिबनिज के नाम १७वीं सदी के अंत में दर्ज है।

मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी के इस अनुसंधान दल ने यह भी पता लगाया कि इस 'केरल गोष्ठी' ने ही पाई (π) का मान दशमलव के ९ व १० अंक तक और बाद में १७ अंक तक ज्ञात किया था।

और पुख्ते पारिस्थितिक प्रमाणों से यह साफ जाहिर होता है कि भारतीयों ने अपनी इस खोज को गणित के अच्छे जानकार ईसाई मिशनरियों को १५वीं सदी में सौंपा था। अनुसंधानकर्ताओं का मानना है कि उन्हीं मिशनरियों के हाथ से अंत में यह गणितीय सूत्र न्यूटन के हाथ लगा होगा।

डॉ. जोसेफ के अनुसार आधुनिक गणित के प्रणेता के रूप में यूरोप को ही जाना जाता है परंतु मध्यकालीन भारत में हुई १४वीं और १६वीं सदियों की खोजों को नजरअंदाज ही किया गया है। □



प्रश्न : ईश्वर को हम क्यों मानें ?

उत्तर : ईश्वर है, इसलिए मानें ।

प्रश्न : ईश्वर है या नहीं- इसका क्या पता ?

उत्तर : संसार में जो भी वस्तु दिखती है, उसका कोई-न-कोई निर्माणकर्ता होता है क्योंकि निर्माणकर्ता के बिना कोई भी वस्तु निर्मित नहीं होती । ऐसे ही समुद्र, पृथ्वी, चन्द्र, सूर्य, वायु, तारे आदि हमें दिखते हैं तो इनका भी कोई रचयिता जरूर होना चाहिए । इनका रचयिता कोई सामान्य मनुष्य नहीं हो सकता, सर्वसमर्थ ईश्वर ही हो सकता है । दूसरी बात, समुद्र अपनी मर्यादा में रहता है, चन्द्र-सूर्य नियमित समय पर उदित और अस्त होते हैं आदि-आदि तो इनका नियमन, संचालन करनेवाला कोई होना चाहिए । इनका नियामक सर्वसमर्थ ईश्वर ही हो सकता है ।

प्रश्न : समुद्र, पृथ्वी आदि की रचना व नियमन तो प्रकृति करती है । अतः ईश्वर को ही रचयिता और नियामक क्यों मानें ?

उत्तर : प्रकृति जड़ है या चेतन अर्थात् उसमें ज्ञान है या नहीं ? आप प्रकृति को ज्ञानवाली मानते हैं तो हम उसीको ईश्वर कहते हैं । हमारे शास्त्रों में ईश्वररूप से शक्ति का भी वर्णन है । अतः आपकी-हमारी मान्यता में शब्दमात्र का ही भेद हुआ, तत्त्व में कोई भेद नहीं हुआ । अगर आप मानते हैं कि प्रकृति जड़ है तो जड़ प्रकृति के द्वारा ज्ञानपूर्वक क्रिया नहीं हो सकती । प्राणियों की रचना करना, उनके शुभाशुभ कर्मों का फल देना आदि क्रियाएँ जड़ प्रकृति के द्वारा नहीं हो सकतीं क्योंकि ज्ञानपूर्वक क्रिया के बिना संसार के जीवों की व्यवस्था नहीं हो सकती । जड़ प्रकृति में परिवर्तन जरूर होता है पर उसमें ज्ञानपूर्वक क्रिया करने की शक्ति नहीं है, इसलिए 'ईश्वर है' - ऐसा हमें मानना ही पड़ेगा ।

दो पक्ष हैं : 'ईश्वर नहीं है' व 'ईश्वर है
अगर 'ईश्वर नहीं है' - यह बात ही सच्ची निक
तो ईश्वर को न माननेवाले व ईश्वर को माननेवा
दोनों बराबर ही रहेंगे अर्थात् ईश्वर को मानने
की कोई हानि नहीं होगी । परंतु 'ई
है' - यह बात ही सच्ची निक
तो उसे माननेवाले को तो ई
की प्राप्ति हो जायेगी प
माननेवाला सर्वथा रीता
जायेगा । अतः 'ईश्वर है
यह मानना ही सबके
ठीक है परंतु केवल ई
को मानने में ही संतोष
करना चाहिए, प्रत्युत उस
तो प्राप्त ही कर लेना चा
क्योंकि ईश्वर को प्राप्त करने का साम
मनुष्यमात्र में है ।

जो अंग्रेजी भाषा को मानता है, वह उस
सीखने का अभ्यास करेगा तो उसको अंग्रेजी
जायेगी परंतु जो अंग्रेजी को मानता ही नहीं,
उसको सीखने का अभ्यास भी क्यों करेगा
जैसे किसीका अंग्रेजी में तार आया तो अंग्रेजी
जानकार व्यक्ति ने उसे पढ़ा कि अमुक व्यक्ति
ज्यादा बीमार है । वहाँ जाकर देखा तो बात स
निकली, आदमी ज्यादा बीमार था । अतः मा
पड़ेगा कि अंग्रेजी भाषा है, तभी तो तार में लि
बात सच्ची निकली । ऐसे ही जो ईश्वर की प्रा
में सच्चे हृदय से लगे हुए हैं, उनमें सामान्य मनु
से विशेषता दिखती है । उनके संग से, भाषण
शांति मिलती है । मनुष्यों को ही नहीं, पशु-पक्षि
को भी उनसे शांति मिलती है । जिन्हें ईश्वर
प्राप्ति हो गयी है, उनमें बहुत विलक्षणता
जाती है, जो सामान्य मनुष्यों में नहीं होत
ईश्वर नहीं है तो उनमें विलक्षणता कहाँ से आयी
अतः मानना ही पड़ेगा कि ईश्वर है ।

मनुष्य को भूख लगती है तो सिद्ध होता है कि कोई खाद्य वस्तु है। ऐसे ही मनुष्य को अपूर्णता का अनुभव होता है तो इससे सिद्ध होता है कि कोई पूर्ण तत्त्व है। उसीको ईश्वर कहते हैं।

किसीके मन में इच्छा नहीं होती कि मैं आकाश के फल खाऊँ क्योंकि वहाँ फल लगते ही नहीं। मनुष्यमात्र में इच्छा रहती है कि मैं सदा जीता रहूँ ('सत्' की इच्छा), सब कुछ जान लूँ ('चित्' की इच्छा) व सदा सुखी रहूँ ('आनंद' की इच्छा)। इससे सिद्ध हुआ कि ऐसा कोई सच्चिदानन्दस्वरूप तत्त्व है, जिसे प्राप्त करने की इच्छा मनुष्यमात्र में है। उसीको ईश्वर कहते हैं।

कोई भी मनुष्य अपने से किसीको बड़ा मानता है तो उसने वास्तव में ईश्वरवाद को स्वीकार कर लिया क्योंकि बड़प्पन की परम्परा जहाँ समाप्त होती है वही ईश्वर है। बल, बुद्धि, विद्या, योग्यता, ऐश्वर्य, शोभा आदि गुणों की सीमा जहाँ समाप्त होती है, वही ईश्वर है।

वास्तव में ईश्वर मानने (श्रद्धा) का ही विषय है, विचार (तर्क) का विषय नहीं। विचार का विषय वही होता है, जिसमें जिज्ञासा होती है और जिज्ञासा उसीमें होती है, जिसके विषय में हम कुछ जानते हैं और कुछ नहीं जानते। जैसे जगत हमारे देखने में आता है पर जगत तत्त्व से क्या है- इसको हम नहीं जानते, अतः जगत विचार का विषय है। परंतु ईश्वर के विषय में हम कुछ भी नहीं जानते, अतः ईश्वर विचार का (तर्क का) विषय नहीं है, प्रत्युत मानने का (श्रद्धा का) विषय है। ईश्वर का साक्षात्कार किये हुए संत-महापुरुषों व शास्त्रों से सुनकर ही ईश्वर को माना जाता है।

प्रश्न : ईश्वर का नमूना क्या है ?

उत्तर : ईश्वर का नमूना जीवात्मा है क्योंकि ईश्वर भी नित्य, निर्विकार है व जीवात्मा भी नित्य, निर्विकार है परंतु जीवात्मा प्रकृति के वश में हो जाता है और ईश्वर प्रकृति के वश में कभी हुआ नहीं, है नहीं और होगा भी नहीं।

सबको अपनी सत्ता का अनुभव होता है कि 'मैं हूँ'। इसमें न तो कभी संदेह होता है कि 'मैं हूँ या नहीं हूँ', न कभी परीक्षा करते हैं और न कभी अपनी सत्ता के अभाव का अनुभव होता है। शरीर पहले भी नहीं था और बाद में भी नहीं रहेगा पर अपनी सत्ता की तरफ ध्यान देने से ऐसा अनुभव नहीं होता कि मैं नहीं था। हाँ, इस विषय में 'पता नहीं है' - ऐसा तो कह सकते हैं पर 'मैं नहीं था'- ऐसा नहीं कह सकते क्योंकि अपनी सत्ता के (अपने-आपके) अभाव का अनुभव किसीको भी नहीं होता। वर्तमान में भी शरीर प्रतिक्षण अभाव में जा रहा है, मिट रहा है, अपने से अलग हो रहा है पर 'मैं अभाव में जा रहा हूँ'- ऐसा अनुभव किसीको भी नहीं होता, प्रत्युत यही अनुभव होता है कि शरीर अभाव में जा रहा है। शरीर के अभाव का अनुभव वही कर सकता है जो भावरूप हो। 'नहीं' को जाननेवाला 'है' रूप ही हो सकता है। अतः सिद्ध हुआ कि शरीर के अभाव को जाननेवाला स्वयं (जीवात्मा) भावरूप है, सत्-रूप है।

संसार एक घंटे पहले जैसा था वैसा अभी नहीं है, प्रतिक्षण अभाव ('नहीं') की तरफ जा रहा है परंतु जिसके आधार पर परिवर्तनशील संसार टिका है, ऐसा कोई प्रकाशक, आधार, रचयिता, सर्वसमर्थ तत्त्व है, जिसमें कभी कोई परिवर्तन नहीं होता। संसार में देश, काल, वस्तु व्यक्ति, परिस्थिति आदि का जो कुछ परिवर्तन होता है, वह सब उस परिवर्तनरहित तत्त्व में ही होता है। जैसे स्वच्छ आकाश में बादल बन जाते हैं, उनमें गर्जना होने लगती है, बिजली चमकने लगती है, जल की बूँदें बरसने लगती हैं परंतु यह सब होने पर भी आकाश ज्यों-का-त्यों रहता है। ईश्वर आकाश की तरह है। उसमें संसार का उत्पन्न व लीन होना, देश, काल, वस्तु, व्यक्ति, घटना, परिस्थिति आदि में परिवर्तन होना आदि विविध क्रियाएँ होती हैं पर वह (ईश्वर) ज्यों-का-त्यों निर्विकार, परिवर्तनरहित रहता है। □



एक संत एक दवाखाने के सामने पेड़ के नीचे बैठे थे। उनकी मंद-मंद मुसकान डॉक्टर व मरीजों का ध्यान बार-बार आकृष्ट कर रही थी। डॉक्टर की ओर देखते-देखते संत एकाएक हँसे। सभी लोग उनकी ओर देखने लगे। डॉक्टर को विशेष आश्चर्य हुआ। आधुनिक चिकित्सक होकर भी उसके मन में संतों के प्रति श्रद्धा-भक्ति के संस्कार थे। वह अपना चिकित्सा-कार्य छोड़कर उठा और विनम्र भाव से उनके चरणों में प्रणाम करते हुए बोला : ''महाराज ! मेरी ओर देखकर मुसकान भरे आपके मुखमंडल पर अचानक हँसी आयी, इसका राज जानने की इच्छा से आपके चरणों में उपस्थित हुआ हूँ।''

संत कुछ देर चुप रहे परंतु डॉक्टर के बार-बार अनुनय-विनय करने पर बोले : ''बेटे ! तुमने भिन्न-भिन्न प्रकार से रोगियों की जाँच की। हृदय की गति, रक्तचाप आदि का परीक्षण किया। शरीर को हर तरह परखा किंतु मुझे अफसोस इस बात का है कि तुम्हें उन्होंने केवल पत्ते तोड़ना सिखाया है, मूल उखाड़ना न
सिखाया।''

''महाराज ! मेरी दादी
ठीक ही कहती थी :

ज्यों केले के पात में,
पात पात में पात
त्यों संतन की बात में,
बात बात में बात

संतों की बात में ब
रहस्य होता है। कृपा क
मुझे अपनी बात का रह
समझाइये।''

''बेटे ! ये रोग तो
शारीरिक दोष एवं पूर्व
पापरूपी वृक्ष के पत्ते और
वृक्ष की जड़ है वासना,
भगवान के विस्मरण से जन्मी है और मनमुख
के सिंचन से पोषण पाकर सहज में ही फलत
फूलती है। मन, वचन व शरीर के संयम द्व
पथ्य का पालन - यह उस वृक्ष की
खोदनेवाली कुल्हाड़ी है और उसे उखाड़ने
बल भुजाओं में भरनेवाली रामबाण बूटी
रामनाम की बूटी, जो राम के बाण की तरह क
निष्फल नहीं जाती। तुम्हारी दवाई तो कड़
महँगी और दूसरे अनेक शारीरिक-मानसिक
उत्पन्न करनेवाली है, वह केवल रोग के लक्ष
को छिपानेवाली है लेकिन रामनाम की बूटी
मिठास भरी, निःशुल्क और दूसरे सारे विका
दुःखों तथा भवरोग को ही मिटानेवाली है।

इसलिए भारतीय वैद्यक शास्त्र 'आयुर्वेद'
रचयिता ऋषियों ने अपने ग्रंथों में औषधि-से
के साथ भगवन्नाम-जप व मंत्र चिकित्सा
सद्व्रत (संयम-सदाचार पालन के विभि
नियम) का वर्णन किया है तथा इस सर्वरोगनाश

आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य व यशवर्धक एवं अविनाशी लोकप्रदायक रसायन के सेवन पर विशेष जोर दिया है।

चाहे जो खा लो, चाहे जैसे रहो और मेरी दवा खा के रोग को दबा दो, तुम्हारे डॉक्टरी विद्यावालों की इस बात ने तथा आधुनिक चिकित्साशास्त्र के अधूरेपन ने ही यह कहावत और पक्की बना दी है : **हकीम का यार सदा बीमार।** यह विचारकर मैं अपनी हँसी रोक न सका।''

डॉक्टर व उसके मरीजों को आज बहुत विलक्षण शिक्षा मिली थी। डॉक्टर ने बाबाजी से पूछा : ''महाराज ! अब आप ही मेरे गुरु हैं। बताइये, मैं अपने मरीजों के हित के लिए सबसे पहली बात क्या करूँ ?''

संत बोले : ''वत्स ! ईश्वर हमारे हृदय में रहते हैं। उनके अस्तित्व को भूलने से हम वासनाओं के दास बनकर मनमुख बन जाते हैं एवं अहितकर आहार-विहार द्वारा विभिन्न रोगों को आमंत्रण देते हैं।

एक बार गुरु अर्जुनदेवजी से पूछा गया कि 'बीमारी क्यों होती है ?' तो उन्होंने कहा था :

परमेश्वर ते भुल्लियाँ व्यापन सब्बे रोग।

अर्थात् ईश्वर को भूलना ऐसी गलती है, जिससे सब रोग पैदा होते हैं।

आज के रोगी इसलिए परेशान हैं क्योंकि वे 'राम' को भूले हुए हैं। उन्हें अपने रोम-रोम में रम रहे रामतत्त्व को जगाना चाहिए।

राम नाम की औषधि, खरी नीयत से खाय।
अंग रोग व्यापे नहीं, महारोग मिट जाय॥

तुम लोगों के हित का चिंतन कर दवाई दिया करो और ऋषियों तथा संतों-महापुरुषों के इस संदेश को हर मरीज तक पहुँचाया करो - यही मेरा तुम्हें संदेश है।'' □

पावन उद्गार

बापू नित्य नवीन, नित्य वर्धनीय आनंदस्वरूप हैं

''परम पूज्य बापू के दर्शन करने मैं पहले भी आ चुका हूँ। दर्शन करके **'दिने-दिने नवं-नवं प्रतिक्षण वर्धमानम्'** अर्थात् बापू नित्य नवीन, नित्य वर्धनीय आनंदस्वरूप हैं ऐसा अनुभव हो रहा है और हो यह स्वाभाविक ही है। पूज्य बापू को प्रणाम !''

- सुप्रसिद्ध कथाकार संत श्री मोरारी बापू।

''हमारे पूज्य आसारामजी बापू बहुत ही कम समय में संस्कृति का जतन और उत्थान करनेवाले महान संत हैं।'' **- आचार्य श्री गिरिराज किशोरजी, विश्व हिन्दू परिषद।**

संतों के मार्गदर्शन में देश चलेगा तो आबाद होगा

''पूज्य बापूजी में कर्मयोग, भक्तियोग तथा ज्ञानयोग तीनों का ही समावेश है। आप आज करोड़ों-करोड़ों भक्तों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। संतों के मार्गदर्शन में देश चलेगा तो आबाद होगा। मैं तो बड़े-बड़े नेताओं से यही कहता हूँ कि आप संतों का आशीर्वाद जरूर लो। इनके चरणों में अगर रहेंगे तो सत्ता रहेगी, टिकेगी तथा उसीसे धर्म की स्थापना भी होगी।''

- श्री अशोक सिंहल, अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद।

आपके दर्शनमात्र से मुझे अद्भुत शक्ति मिलती है

''पूज्य बापूजी के लिए मेरे दिल में जो श्रद्धा है, उसको बयान करने के लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं है। आज के भटके समाज में भी यदि कुछ लोग सन्मार्ग पर चल रहे हैं तो यह इन महापुरुषों के अमृतवचनों का ही प्रभाव है। बापूजी की अमृतवाणी का विशेषकर मुझ पर तो बहुत प्रभाव पड़ता है। मेरा तो मन करता है कि बापूजी जहाँ कहीं भी हों, वहीं पर उड़कर उनके दर्शन के लिए पहुँच जाऊँ व कुछ पल ही सही, उनके सान्निध्य का लाभ लूँ। आपके दर्शनमात्र से ही मुझे एक अद्भुत शक्ति मिलती है।''

- श्री प्रकाश सिंह बादल, मुख्यमंत्री, पंजाब।

('युवाधन सुरक्षा' के नवीन संस्करण से) □



हर महीने में गर्भ-शरीर के अवयव व धातुएँ आकार लेती हैं, अतः विकासक्रम के अनुसार मासानुमासिक कुछ विशेष आहार लेना चाहिए।

पहला महीना : गर्भधारण का संदेह होते ही गर्भिणी सादा मिश्रीवाला सहज में ठंडा हुआ दूध उचित मात्रा में पाचनशक्ति के अनुसार तीन घंटे के अंतराल से ले अथवा सुबह-शाम ले। इसके साथ सुबह १ चम्मच मक्खन में रुचि अनुसार मिश्री व काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर ले एवं हरे नारियल की चार चम्मच गिरी के साथ २ चम्मच सौंफ खूब देर तक चबाकर खाये। इससे बालक का शरीर पुष्ट, सुडौल व गौरवर्ण का होगा।

दूसरा महीना : इसमें शतावरी, जीवन्ती, अश्वगंधा, मुलहठी, बला आदि मधुर औषधियों में से एक या अधिक का १ ग्राम चूर्ण २०० मि.ली. दूध में २०० मि.ली. पानी मिलाकर मध्यम आँच पर उबालते हुए पानी का भाग जल जाने पर सेवन करे।

सवा महीना होने पर आश्रम द्वारा दी औषध से ३ मास तक पुंसवन कर्म करे।

तीसरा महीना : इस महीने में दूध को ठंडा कर १ चम्मच शुद्ध घी व ३ चम्मच शहद (अर्थात् घी व शहद विषम मात्रा में) मिलाकर सुबह-शाम ले।

अनार का रस पीने तथा **'ॐ नमो नारायण'** का जप करने से उलटी दूर होती है।

चौथा महीना : इसमें प्रतिदिन २० से ४० ग्राम मक्खन को धोकर छाछ का अंश निकालकर मिश्री के साथ या गुनगुने दूध में डालकर अपनी पाचनशक्ति के अनुसार सेवन करे।

इस मास में बालक का हृदय सक्रिय होने से वह सुनने-समझने लगता है। बालक की इच्छानुसार माता मन में आहार-विहार संब विविध इच्छाएँ उत्प होने से उनकी पू युक्ति से (अथ अहितकर न हो) करनी चाहिए।

पाँचवाँ महीना : इस महीने से गर्भ मस्तिष्क का विकास शुरू हो जाने से दूध में से २० ग्राम घी ले या दिन में दाल-रोटी, चाव में ७-८ चम्मच घी ले। रात को १ से ७ बाद (अपने पाचनानुसार) भिगो दे, सुबह छिल निकाल के घोंटकर खाये व ऊपर से दूध पीये

इस महीने के प्रारंभ से ही माँ को बाल में इच्छित धर्मबल, नीतिबल, मनोबल सुसंस्कारों का अनन्य श्रद्धापूर्वक सतत मन चिंतन करना चाहिए। सत्संग व शास्त्र का मनन-चिंतन करना चाहिए।

छठा व सातवाँ महीना : इन महीनों में दू महीने की मधुर औषधियों में गोक्षुर चूर्ण का समा करे व दूध-घी से ले। आश्रम-निर्मित तुलस मूल की माला कमर में धारण करे।

इस महीने से सूर्यदेव को जल चढ़ाकर उन किरणें पेट पर पड़ें, ऐसे स्वस्थता से बैठ उँगलियों पर नारियल तेल लगाकर बाहर नाभि की ओर हलके हाथों से मसाज करते गर्भस्थ शिशु को संबोधित करते हुए कहे : 'जै सूर्यनारायण ऊर्जा, उष्णता, वर्षा देकर जगत कल्याण करते हैं, वैसे तू भी ओजस्वी, तेजस व परोपकारी बनना।'

माँ के स्पर्श से बच्चा आनंदित होता है बाद में २ मिनट तक निम्न मंत्रों का उच्चार करते हुए मसाज चालू रखे।

ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देव

धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ (यजुर्वेदः ३६.३)

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिदता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर॥

(श्रीरामरक्षास्तोत्रम् : ३७)

रामरक्षास्तोत्र के उपर्युक्त श्लोक में 'र' का पुनरावर्तन होने से बच्चा तोतला नहीं रहता। पिता भी अपने प्रेम भरे स्पर्श के साथ गर्भस्थ शिशु को प्रशिक्षित करे।

सातवें मास में स्तन, छाती व पेट पर त्वचा के खिंचने से खुजली शुरू होने पर उँगली से न खुजलाकर देशी गाय के घी की मालिश करनी चाहिए।

आठवाँ व नौवाँ महीना : इन महीनों में चावल को ६ गुना दूध व ६ गुना पानी में पकाकर घी डालकर सुबह-शाम खाये अथवा शाम के भोजन में दूध-दलिया में घी डालकर खाये। शाम का भोजन तरल रूप में लेना जरूरी है।

गर्भ का आकार बढ़ने पर पेट का आकार व भार बढ़ जाने से कब्ज व गैस की शिकायत हो सकती है। निवारणार्थ निम्न प्रयोग अपनी प्रकृति के अनुसार करे।

आठवें महीने के १५ दिन बीत जाने पर २ चम्मच एरण्ड तेल दूध से सुबह १ बार ले, फिर नौवें महीने की शुरुआत में पुनः एक बार ऐसा करे अथवा त्रिफला चूर्ण, [illegible] ईसबगोल इन [illegible] में से जो भी चूर्ण प्रकृति के अनुकूल हो उसका सेवन वैद्यकीय सलाह के अनुसार करे।

✻ पुराने मल की शुद्धि के लिए अनुभवी वैद्य द्वारा निरूह बस्ति व अनुवासन बस्ति ले।

✻ चंदनबला लाक्षादि तैल से पीठ, कटि से जंघाओं तक मालिश करे और इसी तैल में कपड़े का फाहा भिगोकर रोजाना रात को सोते समय योनि के अंदर गहराई में रख लिया करे। इससे योनिमार्ग मृदु बनता है और प्रसूति सुलभ हो जाती है।

पंचामृत : १ चम्मच ताजा दही, ७ चम्मच दूध, २ चम्मच शहद, १ चम्मच घी व १ चम्मच मिश्री को मिला ले। इसमें १ चुटकी केसर भी मिलाना हितावह है। ९ महीने नियमित रूप से यह पंचामृत ले।

गुण : यह शारीरिक शक्ति, स्फूर्ति, स्मरणशक्ति व कांति को बढ़ाता है तथा हृदय, मस्तिष्क आदि अवयवों को पोषण देता है। यह तीनों दोषों को संतुलित करता है व गर्भिणी अवस्था में होनेवाली उलटी को कम करता है।

उपवास में सिंघाड़े व राजगरे की खीर का सेवन करे। इस प्रकार प्रत्येक गर्भवती स्त्री को नियमित रूप से उचित आहार-विहार का सेवन करते हुए नवमास चिकित्सा विधिवत् लेनी चाहिए ताकि प्रसव के बाद भी उसका शरीर सशक्त, सुडौल व स्वस्थ बना रहे, साथ ही वह स्वस्थ, सुडौल, सुंदर और हृष्ट-पुष्ट शिशु को जन्म दे सके। यह चिकित्सा लेने पर सिजेरियन डिलिवरी की नौबत नहीं आयेगी। प्रसूति के समय नर्स, डॉक्टर ऑपरेशन की बात करें तो मना कर दें। गाय के गोबर का १० से ११ मिली. रस (भगवन्नाम जपकर) लेने से सिजेरियन डिलिवरी की नौबत नहीं आती। पूज्य आसारामजी बापू के उपदेश का लाभ लेनेवाले कई परिवारों के जीवन में यह लाभ देखा गया है। ❐

वसंत ऋतु : खाने योग्य – गेहूँ, मूँग, चावल, पुराने जौ, तिल का तेल, परवल, सूरन, सहजन, सुआ, मेथी, बैंगन, ताजी नरम मूली, अदरक आदि।

न खाने योग्य – पचने में भारी, शीत, अम्ल, स्निग्ध व मधुर द्रव्य जैसे - गुड़, दही, टमाटर, पालक, पेठा, ककड़ी, खीरा, खरबूजा, तरबूज, केला, बेर, खजूर, नारियल, कटहल, अंजीर, बेलफल, गन्ने का रस, सूखे मेवे, मिठाई, दूध से बने पदार्थ आदि।

वैवाहिक विज्ञापन वंशे सदैव भवतां हरिभक्तिरस्तु। आपके कुल में सदैव हरिभक्ति बनी रहे।

यादव (ग्वाल) जाति, कश्यप गोत्र, रंग गोरा, ३१/५'-६'', शिक्षा - बैचलर ऑफ फिजिओथैरेपी (बी.पी.टी.), दीक्षा- २००३ लखनऊ में, व्यवसाय - चिकित्सा, गाजीपुर (उ.प्र.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए। फोन : 09450956562. (संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1857)

श्रीवास्तव (कायस्थ) जाति, रूद्धा गोत्र, रंग गोरा, २४/५'-४'', शिक्षा- हायर सैकेण्डरी, दीक्षा - २००२ अमदावाद में, होशंगाबाद (म.प्र.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : 07574-253783. (संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1858)

क्षत्रिय जाति, बटस्य गोत्र, रंग गेहुँआ, २५/५' ६'', शिक्षा - १२वीं, डिप्लोमा इन कम्प्यूट (ग्राफिक डिजाइनर), दीक्षा - २०० अमदावाद में, व्यवसाय - प्राइवेट कंपनी नौकरी (नवी मुंबई में), उड़ीसा निवासी युव हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सजातीय, सुयोग्य व चाहिए। फोन : 09820336676. (संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1861

कुशवाहा जाति, कोशरी गोत्र, रंग गेहुँआ, २०/५'-२'', शिक्षा - बी.एससी. फाइनल, दीक्षा - २००५ सूरत में, श्रीगंगानगर (राज.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : 09928664308. (संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1862)

ब्राह्मण (कान्यकुब्ज) जाति, शाण्डिल्य गोत्र, रंग साँवला, २७/५'-८'', शिक्षा - एम.सी.ए. (यू.पी.टी.यू.), दीक्षा - २००४ दिल्ली में, व्यवसाय- सॉफ्टवेअर इंजीनियर, सरायमीरा जि. कन्नौज (उ.प्र.) निवासी (आंशिक मांगलिक) युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू (उत्तर प्रदेश निवासी को प्राथमिकता) चाहिए। फोन : 05694-235517. (संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1863)

भूमिहार जाति, भारद्वाज गोत्र, रंग गेहुँआ २५/५', शिक्षा - बी.ए., एल.एल.बी. दीक्षा - २००५ गोण्डा में, व्यवसाय शिक्षक, वाराणसी (उ.प्र.) निवास युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य व चाहिए। फोन : 09335810011. (संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1864

ठाकुर (राजपूत) जाति, कुशवाहा गोत्र, रंग गेहुँआ, २५/५'-१'', शिक्षा- एम.बी.ए. (फाइनल परीक्षा दी हुई है), दीक्षा -२००० दिल्ली में, नई दिल्ली निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। (संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1865)

कलाल जाति, नेनाऊर गोत्र, रंग गोरा, २३/५', शिक्षा - १०वीं पास, दीक्षा - २००१ सूरत में, अकोला (महा.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। (संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1866)

बंगाली एकादश तिली जाति, कश्य गोत्र, रंग गोरा, ३०/५'-२'', शिक्षा बी.ए., दीक्षा - २००४ अमदावाद मे झारसुगुडा (उड़ीसा) निवासी युवती हे पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए फोन : 09937025937. (संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1869

राजपूत (ठाकुर) जाति, झाला गोत्र, रंग गोरा, २१/५'-२'', शिक्षा- एम.एससी. इलेक्ट्रॉनिक्स, दीक्षा - २००२ इन्दौर में, व्यवसाय - शासकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज में लेक्चरर, रम्बापुर जि. झाबुआ (म.प्र.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : 09425945374. (संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1870)

सरयूपारी ब्राह्मण जाति, शाण्डिल्य गोत्र, रंग गोरा, २७/५'-७'', शिक्षा - बी.ई. (मैकेनिकल), दीक्षा - २००३ अमदावाद में, प्राइवेट कंपनी में नौकरी, रायपुर (छ.ग.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए। (संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1871)

भगत-ब्याहुत कलवार जाति, कश्यप गोत्र, गोरा, २९/५'-६'', शिक्षा - बी.ए. ईकोनॉमिक (ऑनर्स), कम्प्यूटर में डिप्लोमा, निजी व्यवसाय एवं एक्सपोर्ट, दीक्षा - १९९८ में, पाकु (झारखण्ड) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित सुयोग्य वधू चाहिए। फोन : 09431190218 (संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1872

कुर्मी जाति, चिमानिया गोत्र, रंग गोरा, २३/५'-६'', शिक्षा - एम.ए. (समाजशास्त्र), दीक्षा - २००४ अमदावाद में, जमानी जि. होशंगाबाद (म.प्र.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : 07572-273324. (संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1873)

क्षत्रिय जाति, कश्यप गोत्र, रंग गोरा, २९/४'-६'', शिक्षा - एन.आई.एफ.डी. फैशन डिजाइन्स, डिप्लोमा इन टैक्सटाइल कैमिस्ट्री, व्यवसाय - शिक्षिका, दीक्षा - २००१ बड़ौदा में, बड़ौदा (गुज.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : 0265-2511238. (संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1874)

क्षत्रिय जाति, कश्यप गोत्र, रंग गोरा ३५/५'-१'', शिक्षा-स्नातक, दीक्षा २००१ बड़ौदा में, व्यवसाय- नौकरी बड़ौदा (गुज.) निवासी युवती हे पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहि। फोन : 0265-2511238. (संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1875

उड़िया ब्राह्मण जाति, भारद्वाज गोत्र, रंग गोरा, ३०/५'-४'', शिक्षा - आई.टी., दीक्षा - २००३ पुरी में, व्यवसाय - आई.टी. इंजीनियर (पुणे), पुणे (महा.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए। फोन : 09850747309. (संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1876)

पाल जाति, धोबहा गोत्र, रंग गोरा, २४/५'-२'', शिक्षा - बी.कॉम. (डिप्लोमा इन अकाउन्ट), दीक्षा - २००७ गोरेगाँव (मुंबई) में, व्यवसाय- सर्विस (अकाउन्टेंट), मुम्ब्रा जि. थाना (महा.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : 09324877131. (संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1877)

ब्राह्मण जाति, सरयूपारीय गोत्र, रंग गेहुँअ २५/५'-३'', शिक्षा - एम.ए., एम.फिल (संस्कृत में), दीक्षा - १९९६ इंदौर में, व्यवसाय संस्कृति अध्ययनशाला में व्याख्याता, इन्दौ (म.प्र.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित सुयोग्य वर चाहिए। फोन : 09907044463 (संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1879

विभिन्न समितियों द्वारा किये जा रहे दैवी सेवाकार्यों की एक झलक

संकीर्तन यात्राएँ एवं भंडारे

शहजादपुर जि. अम्बाला (हरि.); अभलोड जि. दाहोद, सीहोर जि. भावनगर (गुज.); बरेली (उ.प्र.); डोंबिवली जि. ठाणे (महा.) में संकीर्तन यात्राएँ निकाली गयीं व भंडारे किये गये ।

गरीबों में अनाज-वितरण

पाली जि. कोरबा (छ.ग.); शिमला (हि.प्र.); झालोद जि. दाहोद (गुज.); संबलपुर (उड़ीसा); संगरूर (पंजाब) के गरीब-असहाय लोगों में निःशुल्क अनाज-वितरण किया गया ।

युवाधन सुरक्षा अभियान

अभलोड जि. दाहोद (गुज.); डोंबिवली जि. ठाणे (महा.); कन्दरोड़ी जि. काँगड़ा (हि.प्र.) के युवाओं में 'युवाधन सुरक्षा' पुस्तक का निःशुल्क वितरण किया गया ।

विविध सेवाकार्य

पिंजौर जि. पंचकुला (हरि.) के गरीब बच्चों में जूते व मोजे बाँटे गये । **डोंबिवली जि. ठाणे (महा.)** के विद्यार्थियों में प्रेरक सुवाक्ययुक्त नोटबुक व पैन बाँटे गये । **झालोद जि. दाहोद (गुज.)** के सरकारी अस्पताल के रोगियों में फल वितरित किये गये । **पंचकुला (हरि.)** के विद्यालय व अनाथालय में फल, स्वेटर व कंबल वितरित किये गये । **गुना, बुरहानपुर (म.प्र.) व बरेली (उ.प्र.)** के गरीब-अभावग्रस्त लोगों में कम्बल बाँटे गये ।

बाल संस्कार केन्द्रों की सत्प्रवृत्तियाँ

पिंपरखेड जि. जलगाँव (महा.) के बा.सं. केन्द्र में संत तुकारामजी के जीवन-चरित्र पर वक्तृत्व-स्पर्धा आयोजित की गयी तथा मातृ-पितृभक्ति पर नाटक का मंचन किया गया ।

इलाहाबाद (उ.प्र.) में कला व सामान्य ज्ञान पर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । **नसरूल्लागंज जि. सिहोर (म.प्र.)** के बच्चों में सत्साहित्य-वितरण किया गया । **धड़गाँव जि. नंदूरबार (महा.)** के बच्चों में 'युवाधन सुरक्षा, संस्कार सिंचन' आदि सत्साहित्य, त्राटक करने हेतु स्वस्तिक कार्ड का निःशुल्क वितरण किया गया । 'महाशिवरात्रि' पर्व पर बच्चों ने सामूहिक रूप से 'महामृत्युंजय मंत्र' का जप किया ।

'वेलेन्टाईन डे' का बहिष्कार

१४ फरवरी २००८ को देश भर में फैले बाल संस्कार केन्द्रों व श्री योग वेदांत सेवा समितियों द्वारा पाश्चात्य कुप्रथा 'वेलेन्टाईन डे' का बहिष्कार किया गया तथा पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा से भारतीय संस्कृति की उदात्त भावना **'मातृ देवो भव । पितृ देवो भव ।'** का आदर करते हुए 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' बड़ी ही भव्यता से मनाया गया । बच्चों ने अपने माता-पिता का पुष्प-चंदन इत्यादि से पूजन किया व दीप जलाकर आरती उतारी । बच्चों द्वारा माता-पिता के पूजन का यह दृश्य बड़ा ही भावपूर्ण रहा । अपने बच्चों को सस्नेह आशीर्वाद देते हुए माता-पिता के नेत्रों से हर्ष के आँसू छलक पड़े । जिन सौभाग्यशाली समितियों व बाल संस्कार केन्द्रों ने 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाया, उनमें से कुछ निम्नानुसार हैं (स्थानाभाव के कारण सभीके नाम नहीं दिये जा सके) : सेलमपुर जि. देवरिया, लखनऊ, बरेली, गोण्डा, हमीरपुर (उ.प्र.); रायपुर, भिलाई जि. दुर्ग (छ.ग.); देहरादून (उत्तरांचल); दिल्ली; राजपुरा जि. पटियाला, लुधियाना, चण्डीगढ़ (पंजाब); शहजादपुर जि. अम्बाला (हरि.); दौंड जि. पुणे, जिंतूर जि. परभणी, नागपुर, धुलिया, उल्हासनगर, मीरा रोड, बोरीवली, सांताक्रुज, लोअर परेल, मुंबई, थाना, नवी मुंबई (महाराष्ट्र); निवाई, टोंक, सवाई माधोपुर, सागवाड़ा, श्री विजयनगर (राज.); छिंदवाड़ा, भोपाल, बालाघाट (म.प्र.); भोजपुर (बिहार); अमदावाद, पाटण, राजकोट (गुज.) । विदेश में : न्यूजर्सी (अमेरिका) ।

अब पश्चिम का विज्ञान भी मानने लगा है कि भारतीय जीवन-प्रतीकों में दम है । एक ज़माना था जब पश्चिम के लोग भारत को सपेरों और जादूगरों के देश के रूप में जानते थे । धर्म और अध्यात्म के रस में लिपटे प्रतीकों और चिह्नों को वे उपहास की वस्तु समझते थे । भारत उनके लिए अजूबा भी था और रहस्य भी। भला हो मैक्समूलर का, जिन्होंने पश्चिम को संस्कृत से रू-बरू करवाया और स्वामी विवेकानंद का, जिन्होंने उन्हें भारत की तरफ देखने को विवश किया ।



यह तो रही उन पश्चिमी मनीषियों की बात जिनका रुझान धर्म और दर्शन की तरफ रहता है । जहाँ तक वैज्ञानिकों का सवाल है वे भारत के पारंपरिक प्रतीकों को उपहास की ही चीज समझते रहे हैं । हमारे अपने देश के वैज्ञानिक व बुद्धिजीवी भी इन प्रतीकों को पश्चिम की निगाह से ही देखते रहे हैं, भले ही वे अपने निजी जीवन में इनको अंधविश्वास की हद तक अपनाते रहे हों । चाहे 'ॐ' हो या स्वस्तिक चिह्न, उन्होंने इन्हें कभी गंभीरता से नहीं लिया लेकिन हाल के वर्षों में पश्चिम में भारत को जानने की नयी उत्कंठा पैदा हुई है । निश्चय ही इसके लिए पूज्य बापूजी जैसे आध्यात्मिक गुरुओं का धन्यवाद करना चाहिए।

अमेरिका के 'रिसर्च एंड एक्सपेरिमेंटल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरो साइंसेज' के वैज्ञानिकों ने 'ॐ' के उच्चारण से शरीर में होनेवाले परिवर्तनों का अध्ययन किया और पाया कि इसके नियमित प्रयोग से अनेक असाध्य रोग दूर हो गये । भारत के लिए इसमें कोई नयी बात नहीं है । 'ॐ' हजार वर्षों से हमारी जीवनशैली का अभिन्न अंग है 'ॐ' ही नहीं और भी अनेक प्रतीक हैं जिन प अभी अनुसंधान होना बाकी है लेकिन हम बिन वैज्ञानिक अनुसंधान के इन् प्रमाणित नहीं कर सकते सच्चाई यह है कि हम इनके वैज्ञानिक तत्त्वों को भूल गय हैं। इन सब चीजों प इतिहास की इतनी गर्द जम हो चुकी है कि हमें नह मालूम कि हम संभ्रांत दुनिय को कैसे बतायें कि हमा पास इतनी बेशकीमती चीज हैं। न सिर्फ हिन्दू सभ्यता में 'ॐ' का महत्त्व कायम रहा है अपितु भारतभू से निकले तमाम धर्मों तथा बौद्ध, जैन और सिख पंथ में भी इसका महत्त्व रहा है ।

आज वैज्ञानिक इस नतीजे पर पहुँचे हैं वि 'ॐ' के उच्चारण से उठनेवाली ध्वनि तरंगों स पेट, सीने और मस्तिष्क में कंपन होता है जिससे मृत कोशिकाओं में तो नयी चेतना आत ही है, साथ ही नयी कोशिकाओं का भी सृजन होता है । इससे दिल और दिमाग के ऐसे रोग भी ठीक हो गये, जो अपनी अंतिम अवस्था पहुँच चुके थे ।

आज 'अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान' जैसे शीर्ष अस्पताल के डॉक्टर य स्वीकार रहे हैं कि 'ॐ' के उच्चारण का रोगिय पर कितना विलक्षण असर पड़ता है । विडम्बन यह है कि हमें हजारों वर्षों से आजमाये हुए अप उपादानों और प्रतीकों के महत्त्व को जानने के लिए विदेशी ठप्पे की जरूरत पड़ती है, बड़े श की बात है !



स्मृतिशक्तिवर्धक प्रयोग करते भिवानी (हरि.) के विद्यार्थी तथा
योगासन करते जमुना कालरी, जि. अनूपपुर (म.प्र.) के छात्र।



अमरावती (महा.) के वि
के साधकों द्वारा निकाल



पिंजौर, जि. पंचकुला (हरि.) के गरीब विद्यार्थि
सर्वांगीण उत्थान की कुंजियाँ सीखती बड़वानी (म.प्र



सूर्यनमस्कार का अभ्यास करते आर्पो, जि. वर्धा (महा.) के विद्यार्थी तथा
'श्री आसारामायण' का पाठ करती हुईं रायगढ़ (महा.) की छात्राएँ।

'वेलेन्[illegible]नाकर पतन की गर्त में जा रही युवा पीढ़ी को सुसंस्कृत करने हेतु
[illegible] नें १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के रूप में मनाने का शंखनाद किया,
जो न केवल भारत में अपितु विदेशों में भी गूँज उठा।

RNP No. GAMC-1253-A/2
RNI No.66693/97
LWPP No.GUJ/279/06-08
Permitted to post at AHD-I
from 15th to 20th of E.M.

